अफ्रीकी शेरों की आबादी आधी रह जाएगी

पश्चिम और मध्य अफ्रीका में शेरों की आबादी लगातार घट रही है। पूर्वी अफ्रीका की हालत भी बेहतर नहीं है। एक अनुमान के मुताबिक यही रफ्तार रही तो अफ्रीका में शेरों की संख्या अगले 20 सालों में आधी रह जाएगी। बस थोड़ी-सी अच्छी खबर यह है कि दक्षिण अफ्रीका में शेरों की तादाद स्थिर है या शायद थोड़ी बढ़ रही है।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की वन्यजीव संरक्षण अनुसंधान इकाई के हैन्स बोअर और उनके साथियों ने अफ्रीका के विभिन्न हिस्सों में शेरों की आबादी के उपलब्ध आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर उक्त अनुमान व्यक्त किया है। इस विश्लेषण में उन्होंने पहले तो अफ्रीका के विभिन्न भागों में आबादी में गिरावट के रुझानों को पहचाना और फिर इसके आधार पर भावी रुझानों के अनुमान लगाए हैं।

लॉयन गार्जियन नामक परमार्थ संस्था की स्टेफैनी डोलरेनरी के मुताबिक 1 सदी पहले अफ्रीका में 2 लाख शेर थे मगर आज मात्र 20,000 बचे हैं, हालांकि आंकड़ों के अभाव में पक्का आंकड़ा प्रस्तुत करना संभव नहीं है। इस गिरावट के लिए तीन प्रमुख कारण ज़िम्मेदार माने जाते हैं। पहला, मानव आबादी में वृद्धि के साथ शेरों के प्राकृतवास की बरबादी। दूसरा, शिकार जिसकी वजह से शेरों को मिलने वाले भोजन में कमी आती है और तीसरा, स्थानीय लोगों के साथ टकराव क्योंकि स्थानीय लोग शेरों को अपने पालतू पशुओं के लिए एक खतरे की तरह देखते हैं।

जहां अफ्रीका के अन्य भागों में शेरों की तादाद कम हो रही है, वहीं अच्छी खबर यह है कि बोत्सवाना, नमीबिया, दक्षिण अफ्रीका और ज़िम्बाब्वे में इनकी तादाद बढ़ रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि इन देशों में अधिकांश शेर बागड़ों से घिरे आरक्षित क्षेत्रों में रहते हैं। बोअर के मुताबिक यह बात अच्छी भी है और बुरी भी।

अच्छी बात यही है कि ऐसे बागड़बंद आरक्षित क्षेत्रों की वजह से शेर सुरक्षित हैं और उनकी संख्या बढ़ रही है। मगर परेशानी की बात यह है कि इन क्षेत्रों में पल रहे शेरों को पशु चिकित्सकों की देखरेख मिलती है और इनके लिए अतिरिक्त संख्या में शिकार उपलब्ध कराया जाता है। इस मायने में शेरों की यह आबादी प्राकृतिक नहीं है। हो सकता है कि अगले 20 सालों में जंगली शेरों की संख्या कम हो जाए और हमारे पास सिर्फ कृत्रिम परिस्थितियों में कदमताल करते शेर ही बच जाएं।

दरअसल, शेरों को बचाने के लिए ज़रूरी है कि उनके प्राकृतवासों की रक्षा की जाए। शेरों को बचाने का मतलब सिर्फ यही नहीं है कि शेर नाम के प्राणियों की संख्या बरकरार रहे। शेर एक पूरे इको-तंत्र का प्रतीक है। उसे बचाते हुए पूरे इको-तंत्र को समृद्ध होना चाहिए, तभी शेरों के अस्तित्व का व्यापक पर्यावरण की दृष्टि से कोई अर्थ होगा। प्राकृतिक परिवेश में शेर को बचाएंगे तो उससे जुड़ी जैव विविधता का भी संरक्षण होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***

2014 के स्रोत सजिल्द का ऑर्डर करें

मूल्य 200 रुपए (25 रुपए डाक खर्च)